मासिक

इसलाहे समाज

फरवरी 2019 वर्ष 30 अंक 2

जुमादल उख़रा 1440 हिजरी

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

एहसानुल् ह़क़्क़

❑	वार्षिक राशि	100 रुपये
❑	प्रति कापी	10 रुपये
❑	टोटल पेज	28

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)

4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद

दिल्ली-110006

फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613

RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से भारत आफसेट **2035** क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल **4116**, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: एहसानुल् हक्क़

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1. ऐब ढूढना हराम है 2
2. सलफियत एक सकारात्मक विचार धारा 4
3. इन्सान के जीवन का मक़सद 7
4. तौबा करने का फायदा 8
5. बच्चों, गरीबों और गुलामों पर दया 9
6. समता और न्याय की स्थापना 11
7. हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चरित्र एवं स्वभाव 12
8. बन्दों पर अल्लाह के हुक़ूक 14
9. हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्यारी बातें 15
10. आत्मघाती हमलों के बारे में इमाम मुहम्मद बिन सालेह अल उसैमीन रह० का जवाब 17
11. बवासीर का भरोसे मन्द एलाज 20
12. प्रेस रिलीज़ 22
13. प्रेस रिलीज़ (ध्वजा रोहण) 24
14. प्रेस रिलीज़ (शहज़ादा मुहम्मद बिन सलमान) 25
15. प्रेस रिलीज़ (आतंकी हमले की निन्दा) 27

ईमेल:-

Jaridahtarjuman@gmail.com

Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है

वेब साइट:- **www.ahlehadees.org**

सलफियत एक सकारात्मक विचार धारा और आतंकवाद का सख़्त विरोधी है

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी

जुल्म करना बड़ा अपराध है। आतंक फैलाना और आतंकवाद करना इससे बड़ा अपराध और अत्याचार है। ज़िनाकारी व बदकारी भयानक अपराध और बदतरीन (निकृष्टतम) कर्मों में सबसे ऊपर है। मगर किसी निर्दोष को दोषी ठेहराना, नेक और मानवता दोस्त लोगों को जालिम बावर कराना और अमन पसन्दों को आतंकी ठेहराना इस धरती का वह पाप है जिसकी भरपाई असंभव है। माना कि शरीअत और संविधान में आतंकवादियों के लिये कड़ी से कड़ी सज़ा, कठोर से कठोर दण्ड लागू है। कुरआन में साफ साफ लिखा है और यह सन्देश और आदेश मौजूद है कि आतंकवादियों, फसादियों और बागियों को सरेदार लटकाने से पहले उनके हाथों और पांव को विपरीत दिशा से काट डालो, कत्ल कर डालो, सूली पर लटका दो, फांसी का फन्दा लगा कर कैफरे किरदार तक पहुंचा दो ताकि धरती वाले, इन्सान, जानवर, चौपाये, पक्षी, वनस्पति और निर्जीव, जल, थल और नभ की सृष्टि अम्न व चैन की जिन्दगी गुज़ार सके और अल्लाह की धरती पर उसके आदेश का पालन और उसके बन्दों और सृष्टि के अधिकारों की पूरी तरह से अदायगी हो सके। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''उनकी सजा जो अल्लाह तआला से और उसके रसूल से लड़ें और ज़मीन में फसाद करते फिरें, यही है कि वह कत्ल कर दिये जायें या सूली पर चढ़ा दिए जाएं या विपरीत दिशा से उनके हाथ पांव काट दिए जाएं या उन्हें जिला वतन कर दिया जाए यह तो हुई उनकी दुनियावी ज़िल्लत व अपमान और आखिरत में उनके लिये बड़ा अज़ाब है''। (सूरे अल माइदा-३३७)

लेकिन क्या आप तसव्वुर कर सकते हैं कि फसादियों और आतंकवादियों के लिये तय इन संगीन सज़ाओं से ज्यादा भयानक सज़ा का सज़ावार कौन है? दुनिया के सबसे बड़े पापी वह हैं जो स्वयं जुल्म करते हैं, आतंकी कार्रवाइयां अंजाम देते हैं, भाषण और लेख से संसनी फैलाते हैं और अखबारात एवं पत्रिकाओं में और टेलीवीज़न पर फ़र्ज़ी और गलत आंकड़े और रिपोर्ट पेश करके देश व समुदाय को अकारण भय व आतंक में लिप्त करते हैं और चार्जशीट दाखिल होने और कानूनी अमल के पूरा होने से पहले ही अम्न पसन्दों को ही आतंकवादी डिकलियर कर देते हैं या आतंकवादी साबित करने की कोशिश करते हैं। यह सबसे बड़े अपराधी और पापी हैं। कुरआन में अल्लाह तआला फरमान है:

''और जो शख्स कोई गुनाह या गलती करके किसी बेगुनाह के ज़िम्मे थोप दे उसने बहुत बड़ा बोहतान उठाया और खुला गुनाह

किया''। (सूरे निसा'११२)

अम्न व शान्ति के झण्डावाहक ही जब अपराधियों के कटहरे में खड़े कर दिये जाएं तो आप तसव्वुर कर सकते हैं कि फिर अम्न व शान्ति कौन काइम करेगा और भाई चारे और मानवता के दिल नवाज़ नग़मे कौन गाये गा? इस पर मुस्तज़ाद यह कि इस तरह से असल फसादियों और आतंकवादियों को खुली छूट मिल जाए गी और वह अधिकृत आज़ाद और दिलयर बन कर जमीन पर फसाद करने का काम अंजाम देंगे। अम्न पसन्दों की हौसला शिकनी (हतोत्साहन) होगा। उनका विश्वास अच्छे कामों से उठने लगेगा और अगर वह इत्तेफाक़ से ईमान वाले न हुए और अकीदए आख़िरत और जज़ा व सज़ा से कोरे निकले तो फिर ज़मीन और धरतीवासियों का हाल नाकाबिले बयान (अकहनीय) होगा, पुलिस और प्रशासन बेमाना होकर रह जाएगा। हुकूमत और हुकमरां अपनी तमाम तर कुव्वतों के बावजूद वेवक्अत होकर रह जायेंगे और यह देश और उसके वासियों के हक में ऐसी गददारी, ख्यानत, बद दियानती व बदअतवारी और वेकरारी होगी जिसकी कोई भरपाई संभव न होगी।

क्या हमारे प्रशासन, पत्रकारिता, सियादत व क्यादत में यह दम ख़म इतना भी नहीं बचा कि जालिमों को कैफरे किरदार तक पहुंचा दें और इन्साफ पसन्दों और अम्न के झण्डा वाहकों पर आरोप और बोहतान ध रने वालों को लगाम लगा दें कि वही असल अपराधी हैं!!!

मैं चैलेन्ज के साथ कहना चाहता हूं कि पूरे भारत में कहीं भी कोई मिसाल दो जहाँ अहले हदीस ओलमा, उनके फैले हुए मदर्से, उनके सियासतदां, उनके अध्यापक, उनके व्यवपारी व क्षात्र, उनके वक्ता एवं खतीब, उनके मदारिस व मसाजिद, केन्द्र एवं संस्था किसी हिंसा और आतंकवाद की शिक्षा व प्रसार में लिप्त पाये गये हों हालांकि मुझे मालूम है कि सलफी और अहले हदीस भी इन्सान हैं उनके अफराद भी गलतियों से पाक नहीं हैं मगर अन्य लोगों के मुकाबले में उनकी विचारधारा, सिद्धांत, ईमान व यकीन और शिक्षा एवं उपदेश ने उनको इस महा अपराध से सुरक्षित रखा है बल्कि बिना किसी भय के उन्होंने हमेशा आतंकवाद, हिंसा और प्रदर्शन के खिलाफ फतवे और बयान दिये हैं कांफ्रेन्स और सम्मेलन आयोजित किये हैं।

देश भर में सबसे पहले कांफ्रेन्सों और सेमीनारों के द्वारा, फिकह व फतावा के द्वारा, मदारिस व मसाजिद के मेहराबों और पाठशालाओं के द्वारा, पठन पाठन, जन सभाओं के द्वारा, अखबारात और पत्रिकाओं के माध्यम से पूरे देश में अम्न व शान्ति और मानवता की बात करने वाले हम ही नज़र आएंगे। भाई चारा, राष्ट्रीय सदभावना का गीत सुनाने वाले सबसे पहले हम ही नज़र आएंगे। अपने सर्वमान्य मसाइल पर कौम व मिल्लत और उम्मत के हितों को पिरियोरिटी देने वाले हम नज़र आयेंगे। स्वतंत्रता संग्राम के हरावल दस्तों में हमारे ओलमा और अवाम ही नज़र आएंगे और आतंकवाद एवं दाइश की संगीनी से देश, समुदाय को अवगत कराने और उन्हें वर्तमान दौर का सबसे बड़ा नासूर करार देने वाले हम ही नज़र आएंगे। फिर भी हम पर झूठे आरोप का सिलसिला जारी है।

मेरा अक़ीदा है कि सलफियों

का अक़ीदा और विचार धारा (मनहज) उनको किसी भी हिंसा और आतंकवाद से रोकता है। उनका दीन व ईमान उनका इतिहास और उनके लोग, ओलमा और शख्सियात मदारिस, मसाजिद और प्राथमिक विद्यालय इन बातों से बाज़ रखते हैं। उनके अहकाम, इस्लामी कानून उनको खूनी वारदातों से कोसों दूर रखते हैं। उनके सिद्धांत नियम इस बात से घिन और नफरत करते हैं कि वहां से आतंकवादी का गुज़र हो जाए। दुनिया के किसी भी खित्ते के अहले दीसों और सलफियों पर नज़र दौड़ाओ वह कहीं भी प्रदर्शन करते हुए देश की सम्पत्ति को नुकसान पहुंचाते हुए, हुकूमतों के खिलाफ अवाम को उकसाते हुए, मानव अधिकार की दुहाई देते हुए, सड़कों और रेल की पटरियों को जाम करते हुए, जुलूस और रैलियां निकालते हुए और सुधार एवं निर्माण के नाम पर फसाद व बिगाड़ फैलाते हुए या उनके समर्थक बनते हुए नजर नहीं आएंगे, अलबत्ता यह बाजीगर और तालेअ् आज़मा (अवसरवादी) कोई और मौका महल सलफियों पर आरोप और बोहतान तराशी के लिये नहीं पाते तो इसके लिये जमीन प्रशस्त करते हैं, शोशा छोड़ते हैं, शगूफ़ा बाज़ी करते हैं, कुछ फलसफियाना और मुफक्किराना शैली अपनाते हैं, और बड़ी मासूमियत से धोके और चालाकी की चादर ओढ़ कर रास्ता बनाते हैं फिर सलफियत पर हाथ साफ करने की राह निकालते हैं। पिछले दिनों बाज मुल्कों में सलफी हज़रात के प्रभाव और उनकी हैसियत व अवकात को देख कर कुछ अपरिणाम दर्शी, जल्द बाज, क्रान्ति साज़ और फितना बाज़ लोगों ने खुद को ही मर्दे मैदां (सब कुछ) समझ रखा था मगर जब हालात और परिणाम ने बता दिया कि शक्ति और संख्या के हिसाब से सलफी दावत ज़्यादा प्रभावी और ताकतवर है तो उसके खिलाफ एक तीर से कई शिकार शुरू कर दिया।

वास्तव में यही लोग अल्लाह के इस फरमान ''और जो शख्स कोई गुनाह या गलती करके किसी बेगुनाह के ज़िम्मे थोप दे उसने बहुत बड़ा बोहतान उठाया और खुला गुनाह किया''। (सूरे निसा'११२) के पात्र हैं। ऐसे लोगों को अल्लाह से डरना चाहिए, तक़दीर पर ईमान रखना चाहिए, मुसलमानों और देश एवं समुदाय को संकट या कठिनाई में डालने से बचना चाहिए इसी में सबकी भलाई है।

यह वही सलफी विचार धारा है जिस ने भारत में आतंकवाद और दाइश के खिलाफ सबसे पहले ओलमा के हस्ताक्षर पर आधारित लिखित फतवा दिया जिस का देश के राजनेताओं, विभिन्न संगठनों, धर्मगुरूओं और कई संगठनों के पदधारियों ने प्रशंसा एवं सराहना की।

सलफियत एक सकारात्मक विचारधारा का नाम है जो बिना किसी भेद भाव के हर समय हर वर्ग के कल्याण और देश के विकास और अम्न व शान्ति को स्थापित और बाक़ी रखने पर यकीन रखती है। इसलिये सलफी विचार धारा पर किसी गलत आरोप को थोपना धर्म और कानून की निगाह में सरासर अपमान और अपराध है और बेगुनाहों पर इस तरह का झूठा आरोप लगाना महा पाप है।

❑ ❑ ❑

इन्सान के जीवन का मक़सद

नौशाद अहमद

इन्सान के जीवन में उस का चरित्र बड़े मायने रखता है यह एक इन्सान की पहचान है। दूसरे शब्दों में यूं कहा जा सकता है कि दुनिया का हर इन्सान अपने चरित्र की वजह से पहचाना जाता है कि वह समाज में एक अच्छा इन्सान है कि बुरा इन्सान।

इस संसार के रचयता ने यह स्पष्ट रूप से बता दिया है कि इन्सान के दुनिया में आने का मक़सद क्या है। यह लगभग हर इन्सान जानता है कि वह दुनिया में यूं ही नहीं भेज दिया गया है। दुनिया में कोई इलेक्ट्रनिक मशीन या सामान बनाया जाता है तो बनाने वाला उस मशीन का मकसद भी बताता है और यह भी बताता है कि इस मशीन का इस्तेमाल इन्जीनियर के बताए गये तरीकों और निर्देशों के अनुसार होगा तो वह मशीन बिना हानि पहुंचाए अपना काम करेगी और इस्तेमाल करने वाले को लाभ भी पहुँचाएगी। ठीक यही मामला इस संसार के स्वामी का भी है उसने हम जैसे इन्सानों को पैदा किया है तो इस का बहुत बड़ा मक़सद है। इंसान के सामने अच्छे और बुरे में फर्क को स्पष्ट कर दिया गया है दुनिया का शुद्धबुद्धि रखने वाला इन्सान यह जानता है कि उसका कौन सा कर्म अच्छा है और कौन सा कर्म बुरा है। यही अच्छा और बुरा कर्म इन्सान के चरित्र को दर्शाता है।

धर्म इन्सान को अच्छे चरित्र की सीख देता है, और मानव जगत से यही आशा रखता है कि वह अपने धर्म के बताए गये सिद्धांतों पर अमल करेगा। कुरआन में यह स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि हमने इंसान को इस लिये पैदा किया ताकि हम यह परीक्षा ले सकें कि इन्सान को हमने जो बहुमूल्य (कीमती) जीवन दे रखा है वह अपने इस जीवन को अच्छे कामों में लगाता है या गलत कामों में। स्वर्ग सत्कर्म का प्रतीक है और कुकर्म नरक का प्रतीक है। जो इन्सान अच्छा कर्म करे गा, नैतिक मूल्यों, मानव कल्याण, सदभावना और एक दूसरे के साथ सह-अस्तित्व की भावना से रहेगा वह अल्लाह, अपने धर्म और समाज की निगाह में चरित्रवान माना जायेगा उसका यही कर्म स्वर्ग की तरफ ले जाएगा और जो इन्सान सदभावना, प्रेम कल्याण और आपसी मेल मिलाप के रास्ते से हटेगा तो यक़ीनन वह समाज की निगाह में चरित्रवान नहीं माना जाएगा।

यह पूरे मानव जगत के लिये सोचने और चिंता करने का विषय है कि आज पूरी दुनिया में चरित्र का पतन होता जा रहा है और लोग नैतिक मूल्यों और समाजी सदभावना को छोड़ कर भौतिकवाद की तरफ भाग रहे हैं। संसार के स्वामी ने हम तमाम इन्सानों को अपने को चरित्रवान बनाने के लिये कुछ सिद्धांत और नियम बतायें हैं। अगर इनका सहीह तौर से पालन किया जाये तो इन्सान के इस दुनिया में आने का मकसद पूरा हो जायेगा और हर इंसान आखिरत की आज़माइश से बच जायेगा इसलिये इन्सान को अपने असल मक़सद से भटकना नहीं चाहिए।

❑ ❑ ❑

तौबा करने का फायदा

हाफिज़ इबने हजर रह०

तौबा, तौबा करना करने वाले के गुनाह को खत्म कर देती हैं। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

''पाप से तौबा करने वाला उस व्यक्ति की तरह है जिसने पाप ही नहीं किया'' (सुनन इबने माजा बहवाला सहीहुल जामे-३००८)

तौबा बुराइयों को नेकियों में बदल देती है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः ''सिवाए उन लोगों के जो तौबा करें और ईमान लायें और नेक काम करें, ऐसे लोगों के गुनाहों को अल्लाह तआला नेकियों से बदल देता है, अल्लाह बख्शने वाला मेहरबाी करने वाला है'' (सूरे अल फुरकान-७०)

तौबा दिल को पाक व साफ कर देती है। हज़रत मुहम्मद ने फरमायाः ''बन्दा जब गलती करता है तो उसके दिल में एक काला धब्बा पड़ जाता है अगर वह गुनाह छोड़ देता है और मआफी मांगता है तो उसका दिल साफ सुथरा हो जाता है और अगर दोबारा गुनाह (पाप) करता है तो धब्बा ज़्यादा कर दिया जाता है यहां तक कि उसके दिल पर मुकम्मल तरीक़े से छा जाता है। यह वही ''रान'' ''धब्बा'' है जिसको अल्लाह ने कुरआन की सूरे मुतफ़्फ़िफ़ीन आयत न० १४ में बयान किया है'' ''यूं ही नहीं बल्कि उनके दिलों पर उनके आमाल की वजह से जंग (चढ़ गया) है''। (मुसनद अहमद तिर्मिज़ी-बहावाला सहीहुल जामे-१६७०)

तौबा शान्ति पूर्ण और सुखमय जीवन का सबब बन जाती है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः ''और यह कि तुम लोग अपने गुनाह अपने रब से मआफ कराओ, फिर उसकी तरफ मुतवज्जेह रहो, वह तुम को तय वक्त तक अच्छा सामाने (जिन्दगी) देगा'' (सूरे हूद-३)

तौबा करने से ताक़त में इज़ाफ़ा (वृद्धि) और रोज़ी में बरकत होती है। अल्लाह तआला अपने नबी नूह अलैहिस्सलाम की जुबान से एलान करता हैः '' अपने रब से अपने गुनाह मआफ़ कराओ और माफ़ी मांगो वह यक़ीनन बड़ा मआफ करने वाला है। वह तुम पर आसमान को खूब बरस्ता हुआ छोड़ देगा और तुम्हें लगातार माल और औलाद में तरक़्क़ी देगा और तुम्हें बागात देगा और तुम्हारे लिये नहरें निकाल देगा।'' (सूरे नूह-१०-१२)

तौबा दुनिया और आखिरत में कामयाबी की गारंटी देती है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः

''हाँ जो शख्स तौबा करे, ईमान लाए और नेक काम करे, यक़ीन है कि वह निजात पाने वालों में से हो जाए गा'' (सूरे क़िसस्-६७)

''सिवाए उनके जो तौबा कर लें और ईमान लाएं और नेक अमल करें, ऐसे लोग जन्नत में जाएंगे और उनकी ज़रा सी हक़ तलफी (अधिकार हनन) नहीं होगा'' (सूरे मरयम-६०)

अल्लामा इब्नुल क़ैइम रह० ने अपनी किताब ''अद्दाओ वद् दवाओ'' में पाप के बहुत से नुकसानात का उल्लेख किया है जैस इल्म से महरूम रहना, शर्म का खत्म हो जाना, तंगदिली पैदा होना, फरमा बरदारी से महरूमी, दिल पर गुनाहों की मुहर लग जाना, नेक काम करने की क्षमता कम हो जाना, दिल के अन्दर भय बैठ जाना, गुनाहों को मामूली और कमतर समझना, अजाब नाजिल होना, बर्कत का खत्म होना, आखिरत में अज़ाब मिलना।

बच्चों, गरीबों और गुलामों पर दया

❑ **अबुल कलाम आज़ाद**

हुजूर (हज़रत मुहम्मद) सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बच्चों पर बहुत शफ़क़त और दया फरमाते, आप सफर से वापस आते और लोग स्वागत के लिये निकलते तो बच्चे भी साथ होते और वह मामूल के अनुसार दौड़ कर एक दूसरे से आगे निकल जाने की कोशिश करते। जो पहले पहुंचते आप उन्हें साथ सवारी पर बिठा लेते। रास्ते में मिल जाते तो उन्हें स्वयं सलाम करते और उनसे भी प्यार और शफ़क़त का यही बर्ताव करते।

एक बार एक बहुत ही ग़रीब औरत हज़रत आइशा रज़िअल्लाहो अन्हा के पास आई उसकी दो बच्चियां भी साथ में थीं। इत्तेफ़ाक़ से हज़रत आइशा के पास उस वक्त कुछ न था, एक खुजूर पड़ी थी वह उस औरत को दे दी उसने खुजूर के दो टुकड़े किये और एक एक टुकड़ा दोनों बच्चियों को दे दिया। हज़रत आइशा ने यह वाक़्या रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सुनाया तो फरमाया जिस के दिल में खुदा औलाद की मुहब्बत डाल दे और वह इस मुहब्बत का हक़ अदा करे तो नरक (दोज़ख़) की आग से महफूज़ रहेगा।

अबू ज़र गिफ़ारी रजिअल्लाहो तआला अन्हो से आप ने फरमाया था तुम्हारा गुलाम (सेवक) तुम्हारे भाई हैं जो स्वयं खाओ, उन्हें खिलाओ जो खुद पहनो उन्हें पहनाओ, इसलिये इसके बाद से अबू ज़र रजिअल्लाहो तआला अन्हो ने अपने गुलाम को हमेशा खाने पहनने वगैरह में अपने बराबर रखा।

गुलामों के लिये ''गुलाम'' का शब्द भी गवारा (पसन्द) न था। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उन्हें गुलाम और लौंडी कह कर न पुकारा करो ''मेरा बच्चा' मेरी बच्ची'' कहा करो। आप के पास जो गुलाम आता, उसे आज़ाद कर देते लेकिन वह आज़ाद होकर भी आप के दया व प्यार की जंजीर में जकड़े रहते। जैद बिन हारिसा के पिता और चचा उनको लेने के लिये आए और हर कीमत चुकाने के लिये तैयार थे। आप पहले ही जैद को आज़ाद कर चुके थे। जाने न जाने का मामला जैद रज़िअल्लाहो तआला अन्हो पर छोड़ दिया उन्होंने जाने से इन्कार कर दिया और आप के दया व कृपा को मां बाप और दूसरे खूनी रिश्तेदार के दया पर वरियता दी। मुहब्बत और शफक़त के इस सम्मान का सहीह अन्दाज़ा कौन कर सकता है जिसके सामने करीबतरीन खूनी रिश्ते भी बे हक़ीक़त रह गये थे? जैद रज़िअल्लाहो अन्हो के बेटे उसामा रज़िअल्लाहो अन्हो से आप को जितनी मुहब्बत थी वह इसी से स्पष्ट है कि बाज अहम मामलात में उसामा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो ही को आप की बारगाह में सिफारिशी बनाया जाता था।

एक सहाबी (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथी) अपने गुलाम को मार रहे थे। पीछे से आवाज़ आई खुदा को तुम पर इससे ज़्यादा शक्ति है सहाबी ने मुड़ कर देखा तो खुद रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थे। अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल इसे मैंने अल्लाह की खुशी के लिये आज़ाद कर दिया। फ़रमाया अगर तुम इसे आज़ाद न करते तो जहन्नम की आग तुम्हें छू लेती।

सब से आखिरी वसिय्यतों में

से एक वसिय्यत यह थी कि गुलामों और लौंडियों के मामले में खुदा से डरते रहना। एक शख्स ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल गुलाम के दोष को (कुसूर) कितनी बार मआफ करूं। आप खामूश रहे। जब तीसरी बार यही गुजारिश की तो फ़रमाया हर दिन सत्तर बार।

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़्यादा तर दुआ करते थे कि ऐ अल्लाह मुझे गरीब मिस्कीन रख, मिस्कीन उठा और मिस्कीनों के साथ मेरा हश्र कर। हज़रत आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा ने पूछा ऐसा क्यों? फरमाया इस लिये कि मिस्कीन दौलतमन्दों से पहले जन्नत में जायेंगे फिर फरमाया किसी मिस्कीन को अपने दरवाजे से खाली हाथ न लौटाओ, कुछ न हो तो छोहारे का एक टुकड़ा ही सही, ज़रूर दे दो। आइशा ग़रीबों से मुहब्बत करो, उन्हें अपने से नज़दीक रखो, खुदा भी तुम को अपने से नज़दीक रखेगा।

अवाली में एक बुढ़िया थी, उसे जांबर (स्वस्थ्य होने) की उम्मीद न थी। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब उसकी वफ़ात हो तो मुझे ज़रूर खबर करना। मैं जनाज़े की नमाज़ पढ़ाऊंगा। इत्तेफाक़ से बुढ़िया का इन्तेक़ाल कुछ रात गये हुआ। सहाबा ने आप को रात के वक़्त उठाना गवारा न किया और बुढ़िया को दफन कर दिया। सुबह के वक़्त आप ने पूछा और पूरी बात मालूम हुई तो इस खातून की क़बर पर जाकर जनाज़े की नमाज़ अदा की।

एक बार एक क़बीला मुसाफिरवार मदीना आया उसकी हालत खस्ता थी, किसी के शरीर पर साबित कपड़ा नहीं था, पांव नंगे थे, खालें बदन पर बंधी हुई थीं। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नज़र मुबारक उन लोगों की खस्तगी पर पड़ी तो चेहरे का रंग बदल गया। दुखी हालत में अन्दर गये फिर बाहर आए और बिलाल को अज़ान का हुक्म दिया नमाज़ के बाद एक खुतबे में सबको इन गरीबों की मदद करने पर तैयार किया।

अहले हदीस कम्पलैक्स और अहले हदीस मंज़िल के दोनों इतिहासिक और महान निमार्ण कार्यों के सिलसिले में एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमण्डल विभिन्न राज्यों के दौरे पर। इन्शाअल्लाह

जमाअती मित्रों और कौम व मिल्लत के शुभचिंतकों को मालूम है कि अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली और अहले हदीस मंज़िल जामा मस्जिद दिल्ली में दो भव्य तारीखी बिलडिंगों के निमार्ण का काम जारी है। इस सिलसिले में अल हम्दुलिल्लाह अहले हदीस कम्पलैक्स के महान निमार्ण प्रोजेक्ट की दूसरी मंज़िल की ढ़लाई का काम हुआ चाहता है और अहले हदीस मंज़िल में तरमीम और निमार्ण का काम तीसरी मंज़िल तक पहुंच चुका है जो अल्लाह के फज्ल व तौफीक के बाद मुहसिनीने जामअत व जमीअत की सखावत व दानवीरता की देन है। अधिकृत सहयोग के लिये अहबाबे जमाअत सूबाई जमीअतों से तनसीक़ के बाद मस्जिदों में बाजाबता और मुसलसल एलान फरमायें।

जल्द ही मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द का एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमण्डल आप की खिदमत में हाज़िर हो रहा है। इस महान और तारीखी खैर के काम में अपना भर पूर हिस्सा और रोल अदा करके पुण्य के पात्र बनें।

नोटः– इस सिलसिले में संबन्धित राज्यों के पदधारियों और जिम्मेदारान को सूचना दे दी गयी है।

A/c Name : Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind
A/c 629201058685 (ICICI Bank) Chandni Chowk, Delhi-6
(RTGS/NEFT/IFSC CODE ICIC0006292)

समता और न्याय की स्थापना

❑ **अंसार जुबैर मुहम्मदी**

क़ुरआन में अल्लाह तआला फ़रमाता है: '' अल्लाह तआला अद्ल का भलाई का और करावतदारों के साथ अच्छा व्यवहार करने का हुक्म देता है और बेहयाई के कामों, असभ्य हरकतों और जुल्म व ज़्यादती से रोकता है वह खुद तुम्हें नसीहतें कर रहा है कि तुम नसीहत हासिल करो और अल्लाह के अह्द को पूरा करो जबकि तुम आपस में कौल व क़रार और क़समों को उनकी पोख्तगी के बाद न तोड़ो हालाँकि तुम अल्लाह को अपना ज़ामिन ठेहरा चुके हो'' (सूरे नह्ल-०९-९१)

इस आयत में केवल मुसलमान से ही नहीं बल्कि दुनिया के हर इन्सान से संबोधित किया गया है जिस पर अमल करके वह दुनिया के संक्षिप्त जीवन को कारगर बना सकता है और आख़िरत को भी संवार सकता है। पहला हुक्म अद्ल करने का है अद्ल का अर्थ इन्साफ करना होता है। अर्थात एक इन्सान दूसरे इन्सान से इस दुनियावी जिन्दगी में इन्साफ से काम ले। किसी के साथ भी दुश्मनी, मुहब्बत या नजदीकी होने की वजह से इन्साफ का दामन न छोड़ा जाये दूसरे अर्थों में इसे मध्यमार्ग भी कह सकते हैं यानी किसी मामले में अतिश्योक्ति न की जाये यहां तक कि धर्म के मामलात में भी नहीं क्योंकि अतिश्योक्ति इस्लाम के नजदीक एक निन्दनीय हरकत है और तफरीत दीन में कोताही करने का नाम है जो स्वयं एक अप्रिय अमल है।

अद्ल का दूसरा अर्थ बराबर करना होता है। मीज़ान या तराजू को भी अद्ल इसी लिये कहा जात है कि इसके दोनों पलड़े बराबर होते हैं ज़रा सी भी ऊंच नीच अद्ल और इन्साफ के विपरीत होगी। क़्यामत के मैदान में अल्लाह तआला अपनी मीज़ान नसब करेगा जिस में बन्दों के कर्म तौले जायेंगे। इन्साफ की तराजू के आगे किसी और नाप तौल का निजाम नहीं चलेगा क्योंकि वह अल्लाह बड़ा ही न्यायवान अर्थात बड़ा ही इन्साफ करने वाला है।

इन्साफ के तक़ाज़े को पूरा करना हाकिम और प्रजा सबकी समान जिम्मेदारी है। हुक्काम को सम्बोधित करते हुए फरमाया गया ''और जब लोगों का फैसला करो तो अद्ल व इन्साफ से करो यक़ीनन वह बहुत बेहतर चीज़ है, इस की नसीहत तुम्हें अल्लाह कर रहा है, बेशक अल्लाह सुनता और देखता है'' (सूरे निसा-५८)

इस सिलसिले में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कई हदीसों में है कि '' जब तक हाकिम जुल्म न करे अल्लाह उसके साथ होता है जब वह जुल्म करता है तो अल्लाह उसे उसके नफ़्स के हवाले कर देता है''। (इब्ने माजा किताबुल अहकाम)

क़ुरआन कहता है: ''ऐ ईमान वाले, तुम अल्लाह की ख़ातिर हक़ पर काइम हो जाओ और इन्साफ के साथ गवाही देने वाले बन जाओ किसी कौम की दुश्मनी तुम्हें इन्साफ के खिलाफ आमादा न कर दे, इन्साफ किया करो जो पहरेज़गारी के ज्यादा करीब है और अल्लाह से डरते रहो यकीन मानो कि अल्लाह तआला तुम्हारे कर्मों से बाखबर है'' सूरे माइदा-८

क्यामत के दिन जिन सात खुशनसीबों को अल्लाह के अर्श के साए में जगह मिले गी उनमें इन्साफ करने वाला हाकिम भी शामिल होगा इस लिये कि इन्साफ एवं समता से दुनिया में वास्तविक अम्न व शान्ति काइम होती है। अत्याचार से समाज में बेचैनी पैदा होती है।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चरित्र एवं स्वभाव

नियाज़ अहमद तैयबपूरी

इन्सान अपने दीन धर्म और चरित्र एवं स्वभाव से पहचाना जाता है, इस्लाम अखलाक (सदव्यवहार) का मज़हब है।

हज़रत आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा से पूछा गया कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का चरित्र एवं स्वभाव कैसा था। उन्होंने कहा आप का चरित्र कुरआन था। हज़रत आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा के कहने का मतलब यह है कि कुरआन की जो शिक्षाएं हैं उसी के अनुसार आप अमल करते थे।

उमरा बिन्ते अब्दुर्रहमान कहती हैं कि मैंने हज़रत आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा से पूछा कि अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब घर में अकेले होते थे तो उस वक़्त आप का अख़लाक़ (व्यवहार) कैसा होता था। उन्होंने ने कहाः आप लोगों में सबसे नेक सबसे प्रतिष्ठित होते थे, हंसते थे मुस्कुराते थे।

हज़रत अनस रज़िअल्लाहो तआला अन्हो कहते हैं कि मैंने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दस वर्षों तक सेवा की है अल्लाह की क़सम आपने कभी उफ तक नहीं कहा, अगर मैंने कोई काम किया तो यह नहीं कहा कि तुमने इसे ऐसे ऐसे क्यों किया? और अगर कोई काम नहीं किया तो यह नहीं कहा कि इसे क्यों नहीं किया?

हज़रत इब्ने अबी अदना कहते हैं कि अल्लाह के रसूल अल्लाह को अधिकता से ज़िक्र करते थे, लान तान नहीं करते थे, नफली नमाज़ लम्बी पढ़ते थे, खुतबा संछिप्त देते थे, गरीब और बेवाओं के साथ चलने और उनकी ज़रूरत पूरी करने में आर (झिझक) महसूस नहीं करते थे।

हज़रत अनस बिन मालिक बयान करते हैं कि एक देहाती आया और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की चादर पकड़ी और उसको ज़ोर से खींचा। मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की गर्दन को देखा उसमें चादर के किनारे को ज़ोर से खींचने की वजह से निशान पड़ गया, फिर उसने कहा ऐ मुहम्मद! आपके पास अल्लाह का जो माल है उसमें से मुझे देने का हुक्म करें। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हंसते हुए उसे माल से देने का हुक्म दिया।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मआफ़ कर देते थे। एक मौक़े पर आपके पास सोना चांदी लाया गया। आपने उसको सहाबा में तकसीम कर दिया एक देहाती ने कहा अगर अल्लाह ने आपको इन्साफ करने का हुक्म दिया है तो आपने ऐसा किया नहीं? इतनी सख्त अप्रिय बात को आपने सहन कर लिया।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बड़े दानवीर थे, लोगों से बहुत अच्छे से पेश आते थे जो भी आपसे मिलता तो वह आपसे मुहब्बत करता। आप की दानवीरता

लोगों की आवश्यकताओं के अनुसार होती थी जिसको ज्ञान की ज़रूरत होती थी उस को ज्ञान देते जिसको माल की ज़रूरत होती थी उसको माल देते थे।

हज़रत अली रज़िअल्लाहो तआला अन्हो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में बयान करते हैं आप लोगों में सबसे ज़्यादा दानवीर थे, सबसे ज़्यादा साहसी थे, सब से ज़्यादा सच्चे, वचन को सबसे ज़्यादा निभाने और पूरा करने वाले थे, नरम स्वभाव के थे, आप की तरह हमने किसी को नहीं देखा।

आप बीमारों का हाल मालूम करते और उनको सांत्वना देते थे, जनाज़ों के साथ जाते और गुलामों की दावत को कुबूल करते थे।

हज़रत आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा से पूछा गया कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम घर में क्या करते थे तो उन्होंने कहा कि जैसे तुम लोग करते हो, जूता सिलते कपड़े में पेवन्द लगाते और घरेलू काम में हाथ बटाते थे।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब अपने अहबाब में से किसी को तीन दिन तक नहीं देखते तो उनके बारे में पूछते, अगर वह नहीं होते (और किसी काम से बाहर गए होते) तो उनके लिये दुआ करते, और मौजूद होते तो उनसे मुलाकात करते अगर वह बीर होते तो उनका हाल चाल मालूम और बीमार पुर्सी करते।

एक देहाती आया और मस्जिद के एक किनारे में पेशाब करने लगा, सहाबा दौड़े और डांटने लगे, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा किराम को रोका और कहा कि उस पेशाब करने वाले देहाती को उसकी हालत पर छोड़ दो और उसका पेशाब न रोको, जब वह देहाती पेशाब कर चुका तो उनको अपने करीब बुलाया और कहा कि यह अल्लाह का घर है, यह नमाज़ के लिये है, इसमें गन्दगी मुनासिब नहीं है।

एक देहाती आया और मस्जिद के एक किनारे में पेशाब करने लगा, सहाबा दौड़े और डांटने लगे, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा किराम को रोका और कहा कि उस पेशाब करने वाले देहाती को उसकी हालत पर छोड़ दो और उसका पेशाब न रोको, जब वह देहाती पेशाब कर चुका तो उनको अपने करीब बुलाया और कहा कि यह अल्लाह का घर है, यह नमाज़ के लिये है, इसमें गन्दगी मुनासिब नहीं है।

आप रात के पहले पहर में सोते थे और आख़िरी पहर में तहज्जुद पढ़ते थे, कभी पूरी रात नमाज़ पढ़ते, जिसमें सूरे बक़रा, सूरे आल इमरान और सूरे निसा पढ़ते थे। खुशखबरी वाली आयतों पर दुआ मांगते और अज़ाब वाली आयतों पर अल्लाह की पनाह मांगते।

एक रिवायत में है कि नमाज में ज्यादा देर तक खड़े रहने की वजह से आप के पैर फूल और सूज़ जाते इस पर सहाबा ने कहा कि आप इतनी मशक़्क़त क्यों करते हैं जबकि आपके पिछले और अगले गुनाह मआफ कर दिये गये हैं? आपने जवाब दिया किया क्या मैं अल्लाह का शुक्रगुज़ार बन्दा न बनू?

❑ ❑ ❑

बन्दों पर अल्लाह के हुकूक

❑ **मौलाना कमालुददीन असरी**

सवालः अल्लाह तआला ने हमें किस लिए पैदा किया।

जवाबः ताकि हम उसकी इबादत करें और उसके किसी को शरीक न ठहरायें।

अल्लाह तआला का फरमान है ''मैंने जिन्नों और इन्सानों को सिर्फ अपनी इबादत के लिए पैदा किया''। (सूरह जारियात)

और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है अल्लाह तआला का हक़ बन्दों पर यह है कि उसकी इबादत करें और उसके हाथ किसी को शरीक न बनाएं। (बुखरी व मुस्लिम)

सवालः इबादत किसे कहते हैं?

जवाबः इबादत एक ऐसा शब्द है जो उन तमाम बातों व कामों को शामिल है जिन्हें अल्लाह तआला पसन्द करता हो। जैसे दुआ, नमाज़, रोज़ा, ज़कात वगैरह।

इरशादे रब्बानी है, ऐ नबी! कह दो बिला शुबह! मेरी नमाज़ व मेरी इबादत और मेरी ज़िन्दगी व मौत अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए है। (सूरह अनआम)

और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला का इरशाद है कि मेरे बन्दे ने किसी ऐसी चीज़ के ज़रिये मेरी नज़दीकी हासिल नहीं की जो उस पर मेरे फर्ज़ किये गये कामों व इबादतों से मेरे नज़दीक ज़्यादा महबूब हो। (हदीस कुदसी बुखारी)

सवालः हम किस तरह अल्लाह तआला की इबादत व बन्दगी करें?

जवाबः जिस तरह अल्लाह और उसके रसूल ने हमें हुक्म दिया है। इरशाद बारी तआला है ''ऐ मोमिनों अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करो और अपने कर्मों को बातिल न करो''। (सूरह मुहम्मद)

और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान है ''जो शख्स कोई ऐसा काम करे जो हमारे हुक्म के मुताबिक न हो तो वह मरदूद नाकबिले कुबूल है''। (मुस्लिम)

सवालः क्या हम डर और उम्मीद रखते हुए अल्लाह की इबादत करें?

जवाबः हां, हम इसी तरह उसकी इबादत करें। अल्लाह तआला ने मोमिनों की सिफात और खूबियां बयान करते हुए फरमाया उनके पहलू बिस्तरों से अलग रहते हैं वह डर व उम्मीद रखते हुए अपने रब को पुकारते और इबादत व बन्दगी करते हैं और उसकी दी हुई रोज़ी से खर्च करते हैं। (सूरे सजदा)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान है ''मैं अल्लाह से जन्नत का सवाल करता हूं और जहन्नम की आग से उसकी पनाह मांगता हूं''। (अबू दाऊद)

सवालः इबादत में एहसान का क्या मतलब है?

जवाबः इबादत की हालत में अल्लाह का ध्यान में रखना यानी अल्लाह तआला की इबादत इस तरह की जाये कि बन्दा के ज़िहन व दिमाग में यह ख्याल हो कि वह अपने माबूदे हकीकी को देख रहा है अगर यह न हो सके तो कम से कम इतना ख्याल हो कि उसका माबूद उसे ज़रूर देख रहा है। अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को चन्द हिदायत देते हुए फरमाया और उस गालिब व मेहरबान पर भरोसा करो जो नमाज़ में खड़ा होने के वक़्त तुम्हें देखता है। (सूरे शोअ्रा)

और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसलम ने इबादत में एहसान के बारे में हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम के सवाल के जवाब में फरमाया ''अल्लाह की इबादत इस तरह करो गोया तुम उसको देख रहे हो और अगर तुम उसको न देखते हो तो बेशक वह तुम्हें देख रहा है। (मुस्लिम)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्यारी बातें

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि एक आदमी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और कहा ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे अच्छे व्यवहार का सबसे ज़्यादा हकदार (पात्र) कौन है? आप ने फरमायाः तुम्हारी मां, पूछा फिर कौन? फरमायाः तुम्हारी मां, पूछा फिर कौन? फरमायाः तुम्हारी मां, पूछा फिर कौन? फरमायाः तुम्हारे बाप। (बुखारी-मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बदगुमानी से बचो, निसन्देह बदगुमानी सबसे झूठी बात है। (बुखारी)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो जनाज़े में हाज़िर हुआ और नमाज़ पढ़ी तो उसके लिये एक क़ीरात है, और जो जनाज़े में दफन किये जाने तक हाज़िर रहा उसके लिये दो क़ीरात है। आपसे पूछा गया कि यह दो क़ीरात क्या हैं? आपने फरमाया दो बड़े पहाड़ी के समान। (बुखारी-मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किसी खाने पर कभी ऐब नहीं लगाया अगर खाना चाहते तो खा लेते और अगर पसन्द नहीं करते तो नहीं खाते थे। (बुखारी-मुस्लिम)

आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं आपने फरमायाः मुर्दों को बुरा भला न कहो क्योंकि मुर्दों ने जो कुछ किया था उसका बदला उन्हें मिल चुका। (बुखारी-५४)

आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जुहर की नमाज़ से पहले चार रकअत नहीं छोड़ते थे और दो रकअत फज्र से पहले। (बुखारी)

आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तमाम कामों में दायें साइड को पसन्द करते थे, पाकी हासिल करने में, कंघी करने में और जूता पहनने में। (बुखारी)

अनस रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कहते थेः ऐ अल्लाह हम को दुनिया में भलाई दे और आखिरत में भी भलाई दे और जहन्नम की आग से बचा ले। (बुखारी, मुस्लिम)

अनस रज़िअल्लाहो तआला अन्हो नबी से बयान करते हैं आप ने फरमायाः बेशक सब्र पहले दुख के वक्त है। (बुखारी, मुस्लिम)

अनस रज़िअल्लाहो तआला अन्हो नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने

फरमायाः तीन चीज़ें मय्यत के साथ जाती हैं और दो चीज़ें लौट आती हैं और एक चीज़ बाकी रह जाती है उसके परिवार वाले उसका माल और उसका अमल उसके साथ जाता है लेकिन उसके परिवार उसका माल लौट आता है और उसका अमल बाकी रह जाता है। (बुखारी-मुस्लिम)

इब्ने उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुझे जिब्रईल पड़ोसी के बारे में बराबर वसीयत करते रहे यहां तक कि मुझे यह यकीन होने लगा कि वह उसको वारिस बना देंगे। (बुखारी-मुस्लिम)

इब्ने उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः रात में अपनी नमाज़ के आखिर में वित्र पढ़ो। (बुखारी-मुस्लिम)

इब्ने उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः लोगों से भीक मांगने वाला आदमी क्यामत के दिन इस हाल में आये गा कि उसके चेहरे पर गोश्त नहीं होगा। (बुखारी, मुस्लिम)

इब्ने उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसकी अस्र की नमाज़ छूट गयी तो गोया कि वह अपने माल और आल औलाद से काट दिया गया। (बुखारी-मुस्लिम)

सालिम अपने बाप रजिअल्लाहो अन्हुमा से रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः हसद केवल दो चीज़ों में है एक आदमी वह है जिसको अल्लाह ने कुरआन दिया तो वह उसकी रात और दिन में तिलावत करता है और एक आदमी वह है जिस को अल्लाह ने माल दिया तो वह उस माल को रात और दिन में खर्च करता है। (बुखारी, मुस्लिम)

जाबिर रजिअल्लाहो तआला अन्हो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः बायें से न खाओ क्योंकि बायें से शैतान खाता है। (मुस्लिम)

जाबिर रजिअल्लाहो तआला अन्हो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः जो अल्लाह से मुलाकात करेगा और उसके साथ किसी को साझीदार नहीं बनाया होगा तो वह जन्नत में दाखिल होगा और जो अल्लाह से मुलाकात करे गा और उसने उसके साथ किसी को साझीदार बनाया होगा तो जहन्नम में दाखिल होगा। (मुस्लिम)

अबू मूसा रज़िअल्लाहो अल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सुना कि एक आदमी दूसरे आदमी की तारीफ कर रहा था और उसकी तारीफ में मुबालगा (बढ़ा चढ़ा कर) बात कर रहा था तो आप ने फरमाया तुम लोगों ने उस शख्स को हलाक कर दिया या उसकी पीठ को तोड़ दिया। (बुखारी २६६३ मुस्लिम ३००१)

अबू मूसा रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझ से फरमायाः क्या मैं तुम्हें एक ऐसा कलिमा न बताऊं जो जन्नत के खजानों में से एक खजाना है और वह यह है ''ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह''। (बुखारी २७०४ मुस्लिम ६३८४)

❑ ❑ ❑

आत्मघाती हमलों के बारे में
इमाम मुहम्मद बिन सालेह अल उसैमीन रह० का जवाब

जो लोग धमाकू समान इंसानों के पास ले जा कर धमाका कर देते हैं तो यह आत्महत्या के अंतर्गत आता है और जो अपने आप को कत्ल करे वह हमेशा के लिये जहन्नम में दाखिल होगा। इस का सुबूत और दलील सहीह बुखारी में मौजूद है। दूसरे यह कि जब आत्मघाती हमला करने वाला सौ दो सौ लोगों को मार डालता है तो इस से इस्लाम को कोई फाइदा नहीं पहुँचता है। मरने वाले इस्लाम से लाभान्वित भी नहीं हुये और मर भी गये इस तरह की कारवाई से गैरों के अंदर प्रतिशोध की भावना पैदा होती है जिस की वजह से मुसलमानों को पकड़ते और क़त्ल करते हैं।

फिलिस्तीनियों के साथ यहूदियों के व्यवहार की मिसाल हमारे सामने है कोई एक या दो मरता है उस के बदले में दर्जनों पकड़ लिये जाते हैं इस में मुसलमानों को कोई फाइदा नहीं और न ही मरने वालों का कोई फाइदा हुआ।

कुछ लोग अपने आप को नाहक कत्ल करके जहन्नमी हो जाते हैं, ऐसा करने वाला शहीद नहीं हो सकता।

सवालः- आत्मघाती हम्ला करने वाले का क्या हुक्म है। क्या वह आत्महत्या का अपराधी है और हमेशा जहन्नम में रहेगा? क्या वह इसी तरीके से आखिरत में अपने आप को कत्ल करता रहेगा जिस तरह दुनिया में मरा है जैसा कि हदीसों में आता है?

जवाबः- जो कुर्आन की इस आयत ''और अपने आप को कत्ल मत करो अल्लाह तुम पर मेहरबान है'' (सूरः निसा) को पढ़ने के बावजूद आत्मघाती हम्ला करते हैं तो ऐसे लोगों पर आश्चर्य होता है। क्या ऐसा करने से उन को कुछ फाइदा हो सकता है? क्या दुशमन हार मान लेता है। इन धमाकों से दुश्मनी और बढ़ जाती है, यहूदी मुल्क की मिसाल हमारे सामने है जहाँ की एक पार्टी ने अर्बों को खत्म कर देने का मन बना लिया था।

जो लोग धमाकू सामान लेकर इंसानों के भीड़ में जा कर धमाका करते हैं तो यह खुदकुशी (आत्महत्या) है और जिस ने आत्महत्या की तो हदीस के अनुसार वह हमेशा के लिये जहन्नम में जायेगा। इस लिये कि उस ने इस्लाम की खातिर खुदकुशी नहीं की। उस के मरने से दस, सौ या दो सौ के मरने से इस्लाम का कोई फाइदा नहीं हुआ इस आत्मघाती हमले की वजह से दुश्मन मुसलमानों पर जानलेवा हमला करते हैं जैसा कि फिलिस्तीन में यहूदी कर रहें हैं। एक आदमी ६-७ लोगों की जान ले लेता है लेकिन इस के बदले में ६०-७० मुसलमान गिरफतार कर लिये जाते हैं इस से तो मुसलमानों का नुक्सान हुआ।

हमारी समझ से कुछ लोगों का यह काम सिर्फ और सिर्फ आत्महत्या है ऐसा करने वाला हमेशा के लिये जहन्नम में जायेगा।

इस्लाम ने इंसानों के जान व माल और आबरू को महफूज कर दिया है उन की बेहुर्मती को सख़्ती के साथ हराम करार दिया है। नबी स० ने हज्जतुलविदा के मौके पर फरमाया था ''बेशक तुम्हारा खून तुम्हारा माल और तुम्हारी इज्जत एक दूसरे पर हराम है जिस तरह आज के दिन महीने की और मौजूदा शहर की हुर्मत है''। फिर आप स० ने फरमायाः ''क्या मैं ने अल्लाह का पैगाम पहुँचा दिया? ऐ अल्लाह तू गवाह रह'' आप स० ने फरमायाः ''हर इंसान के ऊपर दूसरे इंसान का खून, माल और इज्जत हराम है''। (मुस्लिम)नबी स० ने फरमायाः

''जुल्म से बचो इस लिये कि जुल्म कियामत के दिन की तारीकियों (अंधेरों) में से है'' (मुस्लिम)

अल्लाह तआला ने किसी बेकुसूर को मारने पर सख़्त सजा सुनाई है और मोमिन के बारे में अल्लाह तआला का फरमान हैः ''और जो शख्स मोमिन को जान बूझ कर कत्ल कर डाले तो उस का बदला जहन्नम है जिस में वह सदा रहेगा और अल्लाह का ग़ज़ब और लानत उस पर होगी और उस के लिये बड़ा अजाब तैयार है''। (सूरः निसा-९३)

जिम्मी को गलती से कत्ल के बारे में अल्लाह तआला ने फरमायाः ''और अगर तुम्हारे मुआहिदा-दार हों तो उस के वारिसों को खूँ बहा देना और एक गुलाम मुसलमान का आजाद करना जरूरी है'' (सूरः निसा-९२)

जब जिम्मी के कत्ल के बदले में खूँबहा कत्ल के बदले मृतक के परिजनों को पैसा देना पड़ेगा और कफ्फारा अदा करना पड़ेगा तो जानबूझ कर कत्ल करना उस से भी बड़ा जुर्म और गुनाह है।

रसूल स० ने फरमाया ''जिस ने किसी मुआहदा-दार को क़त्ल किया वह जन्नत की खुश्बू नहीं पायेगा'' (बुखारी, मुस्लिम)

३:- सुप्रिम ओलमा कोंसिल एलान करती है कि इस गलत अकीदे का इस्लाम से कोई लेना देना नहीं है। बेकुसूरों का क़त्ल, माल को तबाह करना और इमारतों को उड़ाना ढ़ाना आदि मुज्रिमाना (अपराधिक) काम हैं जिन का इस्लाम से कोई संबन्ध नहीं है।

इसी तरह सच्चे पक्के मुसलमानों का इन गलत कामों से कोई संबन्ध नहीं है। यह सब बिगड़े अधर्म लोगों का काम है, इन का जुर्म इस्लाम और उसके अनुयायियों पर नहीं थोपा जायेगा। कुरआन में अपराधियों के साथ रहने से भी रोका गया है। अल्लाह तआला फरमाता हैः ''और बाज लोग ऐसे हैं जिन की बातें तुझ को दुनिया में भली मालूम होती हैं और जो कुछ दिल में है उस पर अल्लाह को गवाह करता है हालाँकि वह तुम्हारा दुश्मन है। और जब फिर जाता है तो जमीन में दौड़ धूप करता है कि उस में फसाद फलाए औार खेतों को बर्बाद करे और चौपायों की नस्ल को मार दे। और अल्लाह फसाद को पसंद नहीं करता । और जब कोई उसे कहता है कि अल्लाह से डर तो अकड़खी की वजह से गुनाह पर अड़ जाता है, पस जहन्नम उस को काफी है'' (सूरः बकराः २०४-२०६)

सारी दुनिया के मुसलमानों पर यह जरूरी है कि वह एक दूसरे को ईमान और नेक अमल का उपदेश दें एक दूसरे का खैर खुवाह (शुभचिंतक) बनें, नेकी और तक़्वा की बुनियाद पर सहयोग करें। भलाई का हुक्म दें और बुराई से रोकने की कोशिश करें अल्लाह तआला का फरमान हैः ''और नेकी और तक़्वा के कामों में एक दूसरे की मदद किया करो और गुनाह और जुल्म पर मदद न किया करो और अल्लाह से डरते रहो बेशक अल्लाह बड़ा सख्त अजाब देने वाला है'' (सूरः माइदाः२)

अल्लाह तआला फर्माता है : ''मोमिन मर्द और औरतें एक दूसरे के रफीक़ (साथी संबन्धी) हैं। भले कामों का हुक्म करते हैं और बुरे कामों से रोकते हैं और नमाज पढ़ते हैं और ज़कात देते हैं उन्ही पर अल्लाह रहम करेगा बेशक अल्लाह बड़ा गालिब (शक्तिशाली) बड़ी हिक्मत वाला है''। (सूरः तौबाः७१)

अल्लाह तआला फरमाता है : ''कसम है जमाने की बेशक इंसान (सरासर) नुक्सान में है। लेकिन जिन लोगों ने ईमान कुबूल करके नेक अमल किये और दूसरे को हक पसन्दी की नसीहत करते रहे (वह नुक्सान और घाटे में नहीं) (सूरः अस्रः१-३)

रसूल स० का फरमान हैः ''दीन खैरखुवाही का नाम है, आप

ने यही वाक्य तीन बार कहा। कहा गया किस के लिये ऐ अल्लाह के रसूल! आप स० ने फरमायाः अल्लाह के लिये, उस की किताब के लिये, उस के रसूल के लिये, मुसलमानों के एमाम और जनता के लिये''।

नबी स० ने फरमायाः ''मुहब्बत मेहरबानी में मुसलमानों की मिसाल उस जिस्म की तरह है कि जब उस के जिस्म के किसी हिस्से को कोई तक्लीफ पहुँचती है तो पूरा जिस्म बेखुवाबी और बुखार में तड़प उठता है'' (बुखारी, मुस्लिम)

इस मफहूम (भाव) की बुहुत सी आयतें और हदीसें हैं।

अल्लाह तआला तमाम इंसानों की कठिनाइयों को दूर करे तमाम शासकों को भलाई की तौफ़ीक दे और तमाम मुसलमानों की हालत दुरूस्त फरमाये। अल्लाह ही हर चीज़ पर क़ादिर है।

२. गुमराह लोगों की हिदायत के लिये दुआ की जाये अगर वह नसीहत के मुहताज हैं तो उनको नसीहत की जाये, अगर कोई भ्रम है तो उसको दूर किया जाये। ऐसी सूरत में संभव है कि अल्लाह उनको हिदायत दे दे। जिस तरह इब्ने अब्बास की कोशिशों से कुछ बागी लोगों को हिदायत मिली थी। इस तरह के फित्नों के वक्त अल्लाह से दुआ करनी चाहिये क्योंकि अल्लाह ही हिदायत और निजात देने वाला है। रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल भी अपनी दुआ में कहते थे ऐ अल्लाह! मुझे उन मामलों में रहनुमाई फरमा जिसमें लोग तेरे हुक्म से इख्तिलाफ करते हैं बेशक जिसे तू चाहे सीधे रास्ते की हिदायत देता है तो फिर हमारी क्या हैसियत है हमें भी अल्लाह से दुआ करनी चाहिये। हम अपने लिये भी दुआ करें और ऐसे शख्स के लिये भी दुआ करें जिस के बारे में मालूम हो कि वह सहीह रास्ते से हट गया है या गुमराह हो गया है या किसी के दीन और इज्जत पर हमला करता है या कोई गलत बात करता है। ऐसे मौके पर सब्र की जरूरत है। क्योंकि मखलूक की इस्लाह करना जिंदगी का अहम मकसद है।

सवाल- कुछ लोग इंसानों के खिलाफ हिंसा को जाइज (वैध) समझते हैं। इस बारे में आप की क्या राय है?

जवाबः- यह तरीक़ा गलत है क्योंकि इस्लाम हिंसा का विरोधी है। अल्लाह तआला फरमाता हैः

''अपने पर्वरदिगार की राह की तरफ होशियारी और बेहतरीन नसीहत से लोगों को बुलाता रह और (बहस) की नौबत आये तो बड़े अच्छे ढंग से उनके साथ बहस किया कर''। (सूरः नहल १२५)

अल्लाह तआला ने मूसा और हारून अलैहि० से फिरऔन को समझाने का तरीका बताते हुये फरमाया ''पस जा कर उससे नर्म बात करना शायद वह समझ जाये या डर जाये''। (सूरः त्वाहा-४४)

हिंसा का मुक़ाबला हिंसा से करने से उल्टा नतीजा सामने आता है, इंसानों का नुक्सान होता है। हिंसा और सख्ती का बर्ताव इस्लामी शिक्षा के खिलाफ है। मुसलमानों को नबी और कुरआनी तालीम को अपनाना चाहिये।

उपर्युक्त कुर्आनी आयात, अहादीस सहाबा और शोधकर्ता ओलमा के बयानात को जब कोई इंसाफ पसंद सुन और पढ़ ले गा तो उसे इस बात का यकीन हो जायेगा कि उसका कोई कर्म या बात अल्लाह से छिपी हुयी नहीं है और अल्लाह के सामने जवाबदेह (उत्तरदायी) है लेकिन जो हठधर्म होगा उसके बारे में क्या कहा जा सकता है। हम अल्लाह से तमाम इंसानों की भलाई चाहते हैं वही इसका मालिक और इस पर कादिर है।

''आंतकवाद के विरोध में अहले हदीस ओलमा के फतावे'' से साभार

बवासीर का भरोसेमन्द एलाज, स्वास्थ के लिये लाभदायक कुछ सब्ज़ियाँ

❑ डा०. एम. एन बेग

बवासीर अत्यंत तकलीफदेह बीमारी है, यह खूनी भी होती है और बादी भी। मस्से जब खून से भर जाते हैं तो लैटरिंग के वक़्त ज़रा सा भी जोर लगाने पर फट जाते हैं, और खून धार की शक्ल में निकलने लगता है, बेहद तकलीफ और खून के अधिकतर निकलते रहने की वजह से मरीज़ बेहद कमज़ोर हो जाता है।

यह रोग उन लोगों को ज़्यादा होता है जो काफ़ी वक़्त तक एक ही जगह बैठ कर काम करने के आदी होते हैं, लगातार बैठने की वजह से रगों पर दबाव पड़ता है और वह फूलकर मस्सों की शक्ल में हो जाती है, क़ब्ज़, जिगर की खराबी भी इस रोग के कारण बनते हैं।

आम तौर से इसका एलाज आपरेशन के माध्यम से किया जाता है। गैर अनुभवी चिकत्सक, रोग़न बादाम और कारबोलिक ऐसिड मिश्रित करके सीरिंज के द्वारा मस्सों की बाहरी परत के नीचे यह महलूल (धोल) बहुत मामूली मिक़दार में दाख़िल कर देते हैं जिससे चन्द दिनों में मस्से गल सड़कर गिर जाते हैं और मरीज़ ठीक हो जाता है, लेकिन यह एलाज ख़तरात से खाली नहीं, महलूल अगर मस्सों के अन्दर पहुंच कर खून में मिल जाए तो रोगी की जान को खतरा भी हो सकता है।

इस खतरे के पेश नज़र (दृष्टिगत) हमने लम्बी मुददत की रिसर्च के बाद मस्सों की जड़ में रबर का छल्ला चढ़ाने की टेकनिक का अविष्कार किया है। यह टेक्निक कामयाब भी है और नुकसान भी नहीं है। इसमें खास तौर से तैयार किया गया स्टील की नलकी के माध्यम से मस्से की जड़ पर अत्यंत तंग रबड़ का छल्ला चढ़ा दिया जाता है। इस छल्ले की वजह से मस्से में खून का दौरान बन्द हो जाता है और कुछ दिनों के बाद मस्सा सूख कर गिर जाता है छल्ले की वजह से दर्द का एहसास ज़रूर होता है लेकिन दर्द को दूर करने के लिये दवा लगा दी जाती है, या दर्द दूर करने के लिये कोई दूसरी गोली दी जाती है। यह एलाज सौ प्रतिश कामयाब है। एंन्टी बायोटिक दवाएं भी दी जाती हैं इसके अलावा कई दवा कंपनियां ऐसे कैपसूल बना रही हैं जिनको स्तेमाल करने से रोग ठीक हो जाता है।

पालक में विटामिन ए और आयरन पाया जाता है, आखों की कमज़ोरी और बालों को झड़ने से रोकने में लाभकारी है पालक के पानी से बाल धोया जाए और यह काम अर्से तक जारी रखा जाए तो बालों का झड़ना बन्द हो जाता है।

गठिया की बीमारी मेथी के बराबर इस्तेमाल से दूर हो जाती है।

इसमें विटामिन ए काभी मिकदार में पाया जाता है।

लौकी तुरई स्तेमाल करने से पेट साफ रहता है और खाना जल्द हज़म होता है इसमें सभी विटामिन पाये जाते हैं, इसलिये यह बहुत लाभकारी हैं, लौकी के छिलकों से चेहरा साफ किया जाए और कुछ देर बाद ठन्डे पानी से धो लिया जाए और इसको लगातार किया जाए तो चेहरे के दाग झाइयां दूर हो जाती हैं।

हरा धनिया में भी विटामिन ए पायी जाती है। पोदीना का रस, उलटी को रोकता है, खाने को हज़म करता है, पोदीने को पानी में जोश दे कर भाप ली जाए तो जुकाम में फायदा होता है। अगर जुकाम पुराना तो इस पानी में लेमूं का रस भी मिला दें और भाप लें, फायदा हो जाएगा लेकिन इस तरह कई दिनों तक पाबन्दी के साथ रोज़ाना किया जाए।

मूली खाने को हज़म करता है, इसके टुकड़े करने के बाद इस पर लेमूं निचोड़ कर सलाद के तौर पर स्तेमाल करें तो पेट भी साफ रहेगा, भूख भी लगेगा। गाजर में सब तरह के विटामिन पाए जाते हैं, यह दिल व दिमाग को ताक़त देता है, पटठों को मज़बूत करता है। कमज़ोर बच्चों को गाजर का जूस निकाल कर दें तो खूब भायदा होगा।

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द की पत्रिकाओं का सदस्य बनाने के लिये सहयोग करें।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द अपने अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर है। जमीअत के तीन आर्गन निरंतर प्रकाशित हो रहे हैं।

जरीदा तर्जुमान पाक्षिक (उर्दू) 150 वार्षिक

इस्लाहे समाज मासिक (हिन्दी) 100 वार्षिक

दी सिम्पल ट्रुथ मासिक (अंग्रेज़ी) 100 वार्षिक

खुद भी पढ़ें और दूसरों को खरीदार बनवायें। यह एक मिशन है जिसको कामयाब बनाना हम सब की संयुक्त ज़िम्मेदारी है।

(प्रेस विज्ञप्ति)

पॉयनियर अख़बार का बयान गुमराहकुन और अफसोसनाक:

मौलाना असग़र अली इमाम महदी सलफी

दिल्ली ३१ जनवरी २०१९

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अध्यक्ष मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने पिछले २० जनवरी २०१९ को पॉयनियर अख़बार के अन्दर प्रकाशित रिपोर्ट में डा० जाकिर नायक को आतंकवाद का सलफी प्रचारक क़रार दिये जाने पर अत्यंत अफसोस और आश्चर्य व्यक्त किया है और इसे निन्दनीय क़रार दिया है। उन्होंने कहा कि किसी को भी उस वक़्त तक अपराधी क़रार नहीं दिया जा सकता जब तक कि उस पर आरोप साबित न हो जाये। इसके अतिरिक्त उन्हें सलफी प्रचारक कहना भी दुरूस्त नहीं क्योंकि उनका सलफियत ही नहीं बल्कि किसी भी संगठन से कभी भी लेना देना नहीं रहा। उनकी अपनी एक फिक्र है जिसके अनुसार वह विभिन्न मैदानों में सक्रिय हैं। वह कभी भी किसी मदर्से या संगठन या विचार धारा से नियमित रूप से जुड़े नहीं रहे बल्कि उनके काम करने का अन्दाज़ बिल्कुल अलग और आज़ादाना रहा। वह अपने आप को सलफी या अहले हदीस कहलाना सख्त न पसन्द करते हैं जिसका इज़हार उन्होंने कई अवसर पर किया है। इसके बावजूद पॉयनियर का उन्हें सलफी बावर कराना और फिर सलफियत को आतंकवाद से जोड़ना अत्यंत गलत और हक़ीक़त के विरूद्ध है और उन्हें सलफी प्रचारक बावर कराना सलफियत पर सरासर निराधार आरोप और सलफियों के हृदय को आहत करना है अतः हम उपर्युक्त बयान को जालसाज़ी और अखबारी आचार संहिता का उल्लंघन मानते हुए खण्डन करते हैं, इसके खिलाफ अपनी आपत्ति दर्ज कराते हैं और इसकी कड़े शब्दों में निन्दा करते हैं जहां तक डा० ज़ाकिर नायक का संबन्ध है तो उनके मामले को हुकूमत देख रही है और कानून अपना काम कर रहा है।

अध्यक्ष महोदय ने कहा कि वर्तमान दौर में यह अजीब फैशन चल पड़ा है किसी को भी किसी के साथ जोड़ कर उसकी छवि को बिगाड़ने की कोशिश की जाने लगती है और नियम कानून और आचार संहिता को दरकिनार करके आरोप मढ़ दिए जाते हैं और मानवता की धज्जियां उड़ाई जाती हैं। उन्होंने सलफियत की व्याख्या करते हुए कहा कि सलफियत कुरआन और हदीस के उस उज्जवल पथ आस्थ और विचार धारा का नाम है जिस पर सहाबा किराम, तबा ताबईन अग्रसर थे, अम्न व शान्ति, भाईचारा, और इन्सान दोस्ती और शुभचिंतन उसकी पहचान है। यही कारण है कि आज तक दुनिया के किसी भी देश में सलफी मकतबे फिक्र (विचार

धारा) के लोगों ने किसी सरकार के खिलाफ, धरना प्रदर्शन क्रान्तिकारी और हिंसक प्रोग्रामों में न तो भाग लिया और न ही इस विचार का कभी प्रोत्साहन किया। इसका इस बात पर विश्वास और ईमान है कि शोर हंगामा, हिंसक धरना प्रदर्शन और आतंकवाद से समस्याओं का समाधान नहीं होता बल्कि और उलझ जाते हैं और यह बिल्कुल स्पष्ट है कि जमाअत अहले हदीस हिन्द प्रिय देश का पहला वह संगठन है जिसे सबसे पहले आतंकवाद, दाइश आदि की खुल कर निन्दा करने, उसकी खराबियों से हर खास व आम को बाखबर करने, उनकी निन्दा और खण्डन में सामूहिक फतवे जारी करने और बड़े बड़े सेमीनार, सिम्पोज़ियम और कांफ्रेन्सें आयोजित करने का सौभाग्य प्राप्त है जो पॉयनियर जैसे प्रतिष्ठित अखबार से किसी भी तरह गुप्त नहीं रह सकता। सख्त आश्चर्य इस बात पर है कि ऐसा प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित अखबार इस प्रकार की निराधार खबर फैलाता है जिससे करोड़ों सलफियों और इन्साफ पसन्द नागरिकों को दुख पहुंचा है। हम आशा करते हैं कि उपर्युक्त अख़बार की तरफ से शीघ्रतः इस गलत फहमी को दूर करने का हर संभव प्रयास किया जाएगा।

जारी कर्ता

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

❑ ❑ ❑

पाठक गण ध्यान दें

१-जल्द से जल्द बकाया राशि भेज दें। २-अगर आपको हर महीने की ५ तारीख को पत्रिका न मिले तो इसके बारे में कार्यालय को सुचित करें। न मिलने की सूरत में दूसरी कापी भेजी जायेगी, लेकिन शिकायत करने से पहले अपने नजदीकी डाकखाने पर जानकारी हासिल कर लें। ३-नये खरीदारों से अनुरोध है कि अपने पते में फोन नम्बर अथवा मोबाइल नम्बर और पिन कोड भी लिखें। ४-पुराने खरीदारों से अपील की जाती है कि यदि उनका कोई फोन नम्बर या मोबाइल नम्बर हो तो पोस्ट कार्ड पर या फोन के जरिये अपने खरीदारी नम्बर का हवाला देकर अवश्य भेज दें ताकि जरूरत पड़ने पर उनसे सम्पर्क किय जा सके। ५- मनी आर्डर या हमारे प्रतिनिधियों के माध्यम से पत्रिका के सदस्य बनने वालों को यह सूचित किया जाता है कि रसीद कटवाने के बाद दूसरे महीने ही में पत्रिका भेजी जायेगी। ६- किसी भी तरह की शिकायत के लिये इस नम्बर पर संपर्क करें। ७. नए और पुराने सदस्यों से अुनरोध है कि नक़द पैसा कोरियर और जनरल डाक से न भेजें। इसलाहे समाज के बारे में किसी भी तरह की शिकायत के लिये ३ बजे से ५ बजे तक फून करें। 011-23273407

प्रेस रिलीज़

संविधान की पासदारी व पैरवी और महान भारत का निमार्ण एवं विकास सभी भारतियों की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी :

मौलाना असगर अली इमाम इमाम महदी सलफी

अहले हदीस कम्पलैक्स के अलमाहदुल आली में गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन एवं ध्वजा रोहण

दिल्ली २७ जनवरी २०१६

यकीनन आज के दिन हर भारतीय चाहे वह दुनिया के किसी भी हिस्से में हो बहुत हर्षित एवं प्रसन्न है कि उस की ज़िन्दगी की बहारों में से एक बड़ा मोसमे बहार ७० वां गणतंत्र दिवस की शक्ल में उसे नसीब हुआ है। इसके लिये मैं सभी देशवासियों को हार्दिक बधाई देता हूं। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के इस कम्पलैक्स में शैक्षाणीक एवं शोधीय संस्था अल माहदुल आली लित तखस्सुस फिद दिरासातिल इस्लामियह ने अन्य भारतियों की तरह गणतंत्र दिवस समारोह आयोजित करके यह संदेश दिया है और याद दिलाया है कि इस महान और खूबसूरत भारत की तरह इसका संविधान भी महान और खूबसूरत है। सभी भारतीय जिस तरह यह जश्न मना कर यादों को ताज़ा और हौसलों और वलवलों को शक्ति प्रदान करते हैं उसी तरह सब मिल कर संकल्प करते हैं कि इस महान भारत की एकता और अखण्डता, भाईचारा की सुरक्षा और महान संविधान की पूरी तरह से पासदारी और पालन करते रहेंगे। हम खूबसूरत गंगा जुमनी सभ्यता के मालिक हैं। हम इस सभ्यता की सुरक्षा और देश के निमार्ण और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहेंगे ताकि हमारे असलाफ (पूर्वजों) ने जिस आज़ाद और महान भारत के लिये महान कुर्बानियां दी थीं और जो सपना देखा था वह साकार हो सके। यह उदगार मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने व्यक्त किया। आप २६ जनवरी २०१६ को अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में स्थित अल माहदुल आली लित तखस्सुस फिद दिरासातिल इस्लामिया में ध्वजा रोहण के बाद समारोह में उपस्थित लोगों से संबोधित कर रहे थे उन्होंने अपनी बात जारी रखते हुए कहा कि इस दौर का सबसे बड़ा चैलेन्ज और साज़िश आतंकवाद है जो हमारे प्यारे देश में भी घुसना चाहती है। आइये हम संकल्प करें कि हम उच्च नैतिक मूल्यों और समाजी बराबरी बरक़रा रखने के साथ साथ अपने धर्मों पर अमल पैरा होते हुए और अम्न व कानून की पैरवी करते हुए आतंकवाद और हिंसा का डट कर मुकाबला करेंगे ताकि इस नापाक नासूर का नाम व निशान तक बाकी न रहे।

इस अवसर पर मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के महा सचिव मौलाना मुहम्मद हारून सनाबिली ने भी संबोधित करते हुए कहा कि आज सभी हिन्दुस्तानियों के लिये बड़ी खुशी का दिन है।

हम हर गणतंत्र दिवस और स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर समारोह आयोजित करके यह सन्देश साधारण करते हैं कि हमें देश से प्रेम है और हम दिल से गाते हैं कि ''सारे जहां से अच्छा हिन्दुस्ताँ हमारा'' इस यौमे जुमहूरिया (गणतंत्र दिवस) पर ध्वजा रोहण (झण्डा फराने) के बाद राष्ट्रीय तराना गाया गया। इस अवसर पर प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस दिल्ली के सचिव मौलाना मुहम्मद इरफान शाकिर, डा० शीस इदरीस तैमी के अलावा अल माहदुल आली के अध्यापकगण, क्षात्र, कार्यकर्ता गण और अन्य प्रतिष्ठित लोग मौजूद थे। **(जरीदा तर्जुमान १-१५ फरवरी २०१६)**

(प्रेस विज्ञप्ति)

सऊदी उत्तराधिकारी शहज़ादा मुहम्मद बिन सलमान आल सऊद का प्रिय भारत में दिल की गहराई से स्वागत है :

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी

दिल्ली १६ फरवरी २०१९

सऊदी उत्तराधिकारी शहज़ादा मुहम्मद बिन सलमान आल सऊद का हिन्दुस्तान का दौरा राष्ट्र एवं समुदाय के लिये यक़ीनन बड़ी खुशी और हर्ष की बात है। इससे प्रिय हिन्दुस्तान और सऊदी अरब के बीच पुराने संबन्ध अधिकृत मज़बूत होंगे और आशा है कि उत्तराधिकारी शहज़ादा मुहम्मद बिन सलमान का यह दौरा दोनों देशों के लिये विकास, स्थिरता, अम्न व शान्ति, भाई चारा और मानवता के विकास का प्रतीक और यह सुनेहरी मौका भूतपूर्व के सुनहरे सिलसिलों की बेहतरीन कड़ी साबित होगा। इन दोनों महान देशों के संबन्ध हमेशा मज़बूत और सुगम रहें गे। यह उदगार मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द से अख़बार के नाम जारी एक बयान में किया।

सम्माननीय अमीर (अध्यक्ष) ने कहा कि पूरी दुनिया के मुसलमानों के नज़दीक हरमैन शरीफैन (सऊदी) और उसके खादिमीन बड़ी अक़ीदत का केन्द्र हैं और अपनी दीनदारी, अम्न पसन्दी और इन्सानियत नवाज़ी की वजह से पूरी दुनिया में इज्ज़त की निगाहों से देखे जाते हैं। इसलिये सऊदी उत्तराधिकारी का भारत आगमन खुशी की बात है हम उनका दिल की गहराइयों से स्वागत करते हैं। वैसे भी शहज़ादा मुहम्मद बिन सलमान आल सऊद अपनी बहुत सी खूबियों की वजह से मकबूल एवं प्रिय शख्सीयत के मालिक हैं। हमारे प्रधान मंत्री ने उन्हें देश आने का निमंत्रण देकर दोस्ती और सहयोग का एक और क़दम बढ़ाया है जिसे सऊदी उत्तराधिकारी ने कुबूल करके अपने पुराने संबन्ध का सुबूत दिया है इसलिये हमारे दोनों रहनुमा हम सब की तरफ से बधाई के पात्र हैं।

सम्माननीय अध्यक्ष ने कहा कि इस धरती पर सऊदी अरब वह पहला देश है जहां पर इस्लामी कानून एवं दण्ड लागू हैं जहां के शासक न्यायवान, मानवतावादी और प्रजा खुशहाल और समृद्ध हैं। ज्ञान के के केन्द्र एवं विश्व

विद्यालय आबाद हैं, उच्च चरित्र, सभ्यता एवं संस्कृति की शमा रोशन है और अम्न व शान्ति के माहौल में लोग जिन्दगी बसर कर रहे हैं। हर साल लाखों की तादाद में हाजी और उमरा करने वालों का स्वागत और उच्च स्तर का प्रबन्ध एवं राहत सऊदी अरब का सबसे बड़ा कारनामा है।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अध्यक्ष ने अपने बयान में कहा कि अरब और हिन्द के व्यवपारिक एवं सांस्कृतिक संबन्ध प्राचीन काल से स्थापित हैं। बाज रिवायात के अनुसार यहां के राजा ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खिदमत में उपहार भेजा था। प्राचीन अरबी लिटरेचर में हिन्दुस्तानी सामान व पैदावार के आदान-प्रदान का उल्लेख मिलता है। यूं तो हर दौर में प्रिय देश के संबन्ध सऊदी अरब और अरब वासियों से बेहतर रहे हैं लेकिन सऊदी शासकों के उज्जवल दौर में इन पुराने संबन्धों में और ज़्यादा बेहतरी और मज़बूती आई और दो पक्षीय संबन्धों के पेशे नज़र हिन्दुस्तान के प्रथम प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू सहित हमारे विभिन्न नेताओं, शासकों और वर्तमान प्रधानमंत्री सम्माननीय नरेन्द्र मोदी जी का पुरजोश और गरमजोशी से स्वागत होता रहा है।

पिछले दिनों जब हमारे प्रधान मंत्री ने सऊदी अरब का दौरा किया तो उस वक़्त सऊदी अरब ने उनके सम्मान में और महान भारत के शायाने शान (प्रतिष्ठा अनुसार) वहां का सबसे बड़ा नागरिक एवार्ड पेश किया था। दोनों देशों के आर्थिक संबन्धा के अलावा अम्न व शान्ति और इन्सानी भाई चारे को बढ़ावा देने पर सहयोग और साझा रहा है। आतंकवाद जो वक़्त का सबसे बड़ा नासूर है के अन्त और उन्मूलन में भी दोनों मित्र देश सहमत और सहयोगी हैं।

हमारे देश के लाखों हुनरवान और नौजवान सऊदी अरब में बरसरे रोज़गार हैं जिस से दोनों देशों के आर्थिक और दोस्ताना संबन्धों में मजबूती आती रही है। दूसरे देश के आने वालों के मुक़ाबले में हमारे हिन्दुस्तानी भाई वहां ज़्यादा सम्मान की निगाह से देखे जाते हैं। इसमें हमारे निष्ठा, चरित्र और अच्छे व्यवहार के अलावा दोनों देशों के आपसी विश्वास, संबन्ध और प्रेम का भी दख़ल है और यह बात इस भ्रम और गलत फहमी को दूर करने के लिये काफी है कि वहां कटटर लोगों का वजूद है। आशा है कि इस दौरे से आने वाले दिनों में संबन्धों में और ज़्यादा बेहतरी आएगी। इस दौरे में हिन्दुस्तानी व सऊदी हायर कोआरडीनेशन कमेटी का गठन, दोनों देशों के बीच दूर संचार के मैदान में संभावनाओं की तलाश, तिजारत और निवेश के मैदान में संभावित संसाधनों की खोज और संधियां, पर्यटन व धरोहर के सिलसिले में आपसी सहयोग और कौमी ख़ज़ाना व बुनियादी ढांचा में निवेश के सिलसिले में समझौते पर बात चीत और संधि होने की आशा है।

जारी कर्ता

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

❑ ❑ ❑